PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 2, ISSUE 2

हिंदी के प्रचार प्रसार में इंटरनेट का योगदान

प्रा. एस. के. आतार
आर्टस् ॲन्ड कॉमर्स कॉलेज, नागठाणे
ता. जि.सातारा **महाराष्ट्र**

भूमण्डलीकरण के कारण जनसंचार माध्यमों का दायरा व्यापक एवं विस्तृत हो गया है। नवइलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में इंटरनेट अधिकांश जनसमुदाय दवारा बोली एवं उपयोग में लायी जानेवाली हिंदी को अनेक लोगों तक पहुंचाने का कार्य कर रहा है "इंटरनेट को हिंदी में महाजाल कहते है। महाजाल और कुछ न होकर संगणकों का परस्पर संबध्द ऐसा जाल होता है जिसके जरिए दुनिया भर के लोग संकेत स्थलों की जानकारी का पठनपाठन आदान– प्रदान□संदेश या सूचना प्रेषण एवं स्वीकारादि कार्य कर सकते हैं। परस्पर जुडे संगणकों का विश्वव्यापी समुदाय होने से उसे महाजाल कहा जाता है। यह महाजाल इंटरनेट उपभोक्ताओं को एक दूसरे से जोडने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। "1 वेब मीडिया के प्रति लोगों का आकर्षण दिन ब दिन बढता जा रहा है। इंटरनेट मनुष्य जीवन में प्रवेश कर उन्हें प्रभावित कर रहा है।

इंटरनेट और हिंदी भाषा :–

हिंदी भाषा ने वेबदुनिया डॉट कॉम (www.webduniya.com) इस सव्रप्रथम वेबसाईट के रुप में 1999 में इंटरनेट पर पहला कदम रखा। इस 15–16 वर्षों के कालखंड में इंटरनेट के कारण विभिन्न वेबसाईटस,ब्लॉग्ज,सोशल मीडिया आदि के माध्यम से अधिकांश जनसमुदाय तक हिंदी भाषा को पहुंचाने का कार्य हो रहा है। इंटरनेट पर दिन ब दिन हिंदी के प्रचार एवं प्रसार की गति तेज हो रही है।

हिंदी वेबसाइटस :

आज इंटरनेट पर हिंदी भाषा की अनेक वेबसाइटस हैं जिनमें भाषा, साहित्य, पत्रकारिता, संगठन आदियों से संबंधित तो कुछ साहित्यिक या साहित्येत्तर हैं। साहित्यिक के अंतर्गत हम अनुभूति, अभिव्यक्ति, रचनाकार, हिंदी समय, हिंदी नेस्ट, कविताकोश, संवाद, लघुकथा आदि वेबसाईटस देख सकते हैं जिनपर प्रतिदिन स्तरीय साहित्य प्रदर्शित होता रहता हैं।

रचनाकार विश्व की पहली युनिकोडित हिंदी की सर्वाधिक प्रसारित लोकप्रिय ई–पत्रिका है जिसके प्रतिमाह 3 लाख से भी अधिक पाठक है और जिसके संपादक प्रसिध्द ब्लॉगर रवि रतलामी है इसके साथ साथ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविदयालय, वर्धा के अभिक्रम के अंतर्गत बनाई गई हिंदीसमय (www.hindisamay.com) वेबसाईट पर तकरीबन 1000 रचनाकारों को हम पढ सकते हैं । इसके साथ साथ अधिकांश अखबार भी इंटरनेटपर आ चुके हैं जिनमें दैनिक जागरण, नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान, अमर उजाला, दैनिक भास्कर, जनसत्ता, देशबंधु आदि शामिल है । अब इंटरनेटपर प्रकाशित

समाचार दुनिया के किसी भी कोने में बैठा इंटरनेट उपभोक्ता किसी भी समय पढ सकता है। युनिकोड, मंगल जैसे जैसे युनिवर्सल फॉन्टों ने देवनागरी लिपि को कम्प्यूटर पर, इंटरनेटपर हिंदी भाषा विकास के अनेक दवार खोल दिए हैं ।

हिंदी ब्लॉग्ज (चिटठें) :

आलोक कुमार के 'नौ दो ग्यारह' नामक चिटठें से सन 2003 में हिंदी ब्लॉगिंग की यात्रा प्रारंभ हुई। आज हिंदी भाषा से संबंधित अनेक ब्लॉग्ज इंटरनेटपर उपलब्ध है 'आवश्यकता, उपयोगिता, राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय दुनिया के सैकण्डों में अपनी बात के जरिए जुडनेवालों की बढती संख्या को देखते हुए आज ब्लॉगिंग जैसे द्रुतगामी संचार माध्यम को पॉचवा स्तंभ माना जाने लगा है। कोई इसे वैकल्पिक मीडिया, तो कोई न्यू मीडिया की संज्ञा से नवाजने लगा है'' हिंदी भाषा में अजित वडनेरकर का 'शब्दों का सफर', आकांक्षा यादव का 'शब्दशिखर', सुशील कुमार का 'उल्लूक टाइम्स', डॉ रुपचंद शास्त्री का 'उच्चारण', प्रभात रंजन का 'जानकीपुल', रविशंकर श्रीवास्तव का 'रचनाकार', गोपाल मिश्रा का 'अच्छी खबर' आदि ब्लॉगों को हम उदाहरण के रुप में ले सकते हैं ।

रविंद्र प्रभात के शब्दों में 'हिंदी को अन्तराष्ट्रीय स्वरुप देने में हर उस चिटठाकार की महत्वपूर्ण भूमिका है जो बेहत्तर प्रस्तुतीकरण, गंभीर चिंतन, समसामयिक विषयों पर सूक्ष्मदृष्टि, सृजनात्मकता, समाज की कुसंगतियों पर प्रहार और साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से अपनी बात रखने में सफल हो रहे हैं। चिटठा लेखन और वाचन के लिए सबसे सुखद पहलू तो यह है कि हिंदी में बेहत्तर चिटठा लेखन की शुरुआत हो चुकी है जो हिंदी समाज के लिए शुभ संकेत है'

सोशल मीडिया में हिंदी :

सोशल मीडिया के अंतर्गत फेसबुक, टिवटर, ऑर्कुट आदि का समावेश होता है। इनके माध्यम से सोशल मीडिया के कारण हिंदी का प्रचार एवं प्रसार अनेक पाठकों तक हो रहा है। सोशल मीडिया के कारण हिंदी का साहित्य कबीर से लेकर अब तक के रचनाकारों तक एक साथ पढने को उपलब्ध हो रहा है। आज हम देखते है कि मोबाईल प्रयोगकर्ताओं की संख्या प्रतिदिन बढ रही है जो आगे चलकर हिंदी के लिए उपयोगी सिध्द होगी। सोशल मीडिया में हिंदी का इस्तमाल विभिन्न क्षेत्र के लोग कर रहे हैं। जिनमें अध्यापक, डॉक्टर, राजनेता, अभिनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, खिलाडी आदि शामिल है जो हिंदी के हित की ही बात है।

इसके साथ सोशल मीडिया के अंतर्गत योटयूब को भी महत्वपूर्ण स्थान है। योटयूब एक साझा वेबसाईट है जहां उपयोगकर्ता वेबसाईट पर विडीओ देख सकता है और विडीओ क्लिप साझा कर सकता है योटयूब के माध्यम से हम इंटरनेटपर हिंदी भाषा के साहित्यिक, शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र से संबंधित अनेकानेक विडीओ किसी भी समय देख सकते हैं, सुन सकते हैं। इसके साथ–साथ विभिन्न न्यूज चैनलों के कार्यक्रम (यथा सोनी, जी, नॅशनल जिऑग्राफिक, डिस्कव्हरी आदि) किसी भी समय देख सकते हैं, सुन सकते हैं

इंटरनेटपर हिंदी साहित्यिक सीमाओं को लांघकर अपना प्रसार कर रही है वह कहानी, उपन्यास से आगे बढकर अनेकानेक साहित्यिक तथा साहित्येत्तर विधाओं में विश्व की अन्य भाषाओं से कदमताल कर रही है। धर्मेंद्र प्रताप सिंह के शब्दों में, ''आनेवाला समय हिंदी का है। बस कुछ दकियानूसी और

अदूरदर्शी सोच वाले ही हिंदी के प्रति नकारात्मक भाव व्यक्त कर रहे है। आज के समय में न तो हिंदी की सामग्री की कमी है और न ही पाठकों की। हां, विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में अभी और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। जिससे इसका पूर्ण लाभ आम आदमी को मिल सके। हिंदी का मजबूत पक्ष यह भी है कि यह बाजार की भाषा बन चुकी है जो अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी उपयोगिता सिध्द करने के लिए पर्याप्त है।''2

निष्कर्ष :

इस प्रकार अंत में हम कह सकते है कि इक्कीसवीं सदी कें नवइलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में हिंदी का इंटरनेट के माध्यम से दिन प्रति दिन प्रचार एवं प्रसार हो रहा है। मीडिया के इस युग में हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में हिंदी की विभिन्न वेबसाइटस,हिंदी ब्लॉग्ज (चिटठें), सोशल मीडिया आदियों की महती भूमिका रही है। हिंदी भाषा के विकास में आधुनिक समय में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, विज्ञापन, पत्रकारिता और सिनेमा के साथ साथ इंटरनेट भी हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है और भविष्य में भी देगा इसमें कोई दो राय नहीं है ।

संदर्भ :

1.डॉ सुनीलकुमार लवटे, हिंदी वेबसाहित्य, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद प्र सं 2013 पृ 34

2. अनामी शरण बबल, मीडिया के बदलते तेवर, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली प्र सं 2009 पृ

3.https://hi.wikipedia.org

4. http://www.abhivyakti-hindi.org/vigyan_varta/pradyogiki/2004/computer2.htm

5 www .jansatta.com

6. www.parikalpana.com

7. www.abhivyakti.hindi.org